

गेहूँ की जैविक खेती



जैविक खेती वह सदाबहार कृषि पद्धति है, जो पर्यावरण की शुद्धता, जल व वायु की शुद्धता, भूमि का प्राकृतिक स्वरूप बनाने वाली, जल धारण क्षमता बढ़ाने वाली, धैर्यशील कृत संकल्पित होते हुए रसायनों का उपयोग आवश्यकता अनुसार कम से कम करते हुए कृषक को कम लागत से दीर्घकालीन स्थिर व अच्छी गुणवत्ता वाली पारम्परिक पद्धति है।

गेहूँ भारत की एक प्रमुख धान्य फसल है, जिसकी खेती भारत के करीब सभी राज्यों में की जाती है। जिसमें मुख्यतः अधिक उत्पादन राज्य के मैदानी क्षेत्रों में है। इसका मुख्य कारण यह है, कि मैदानी क्षेत्रों में गेहूँ अधिकांशतः सिंचित और उपजाऊ भूमि में पैदा किया जाता है। वर्तमान में गेहूँ की खेती भारत के कुछ क्षेत्रों में प्रचलित है जिसमें मध्य प्रदेश तथा पंजाब, हरियाणा प्रमुख हैं। मध्यप्रदेश क्षेत्र की प्राकृतिक जलवायु (गर्म व शुष्क) गेहूँ के चमकदार, धब्बे रहित व मोटे दानों के उत्पादन के लिये उपयुक्त है। मध्य प्रदेश में गौ आधारित जैविक पद्धति से उगाये गये गेहूँमें सेमोलिना की मात्रा अधिक होती है जिसका अधिक मूल्य मिलता है साथ ही इसके निर्यात की अधिक संभावनाएँ हैं। जो वास्तव में इसके अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्य निर्धारण में सहायक

जैविक गेहूँ उत्पादन अवश्यक क्यों है ?

- जैविक गेहूँ में 1.5-2.0 प्रतिशत अधिक प्रोटीन तथा बीटा-कैरोटिन की मात्रा पाई जाती है जो कि विटामिन ए बनाता है।
- जैविक गेहूँ अधिकांश रोगों के प्रति सहनशील होता है जिससे इसे जैविक कृषि में बिना किसी परेशानी के उगाया जा सकता है।
- जैविक गेहूँ से कई प्रकार के खाद्य उत्पादन जैसे मेकरोनी, सेवई, तथा नुडल्स बनाए जा सकते हैं। जब गेहूँ जैविक पद्धति से उगाया जाता है तो इस गेहूँ की विश्व बाजार में अच्छी मांग रहती है।
- जैविक कृषि से मृदा उर्वरता तथा स्वास्थ्य के साथ-साथ मृदा में होने वाली जैविक क्रियाओं में सुधार होता है।
- जैविक खाद का उत्पादन किसान द्वारा अपने खेत पर ही करने से उत्पादन लागत में कमी हो जाती है।
- किसानों को प्रमाणित जैविक गेहूँ का उचित मूल्य मिलता है, जिससे उनकी आय में वृद्धि होती है।
- जैविक कृषि में कचरे के उचित प्रबंधन के कारण प्राकृतिक संतुलन बना रहता है तथा साथ ही पर्यावरण प्रदूषण में भी कमी आती है।

बुवाई का समय

मध्य भारत में गेहूँ की बुवाई का सर्वाधिक उचित समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर होता है। मुख्यतः नवम्बर का पहला पखवाड़ा गेहूँ की बुवाई के लिए उपयुक्त समय है।

भूमि का प्रकार एवं तैयारी

- गेहूँ की खेती हेतु पर्याप्त जलधारण क्षमता वाली दोमट, काली एवं बलुई दोमट भूमि उत्तम रहती है, अधिक रेतीली, क्षारीय एवं अम्लीय उपयुक्त नहीं रहती है।
- मध्य भारत में सोयाबीन-गेहूँ व धान-गेहूँ सर्वाधिक प्रचलित फसल चक्र है। सोयाबीन की कटाई एवं गेहूँ की बुवाई में लम्बा अन्तराल होता है।
- सोयाबीन की कटाई के बाद हल से जुताई करनी चाहिए। जहाँ ट्रैक्टर की सुविधा उपलब्ध है वहाँ पर 1 या 2 बार हेरो या कल्टीवेटर से जुताई करके पाटा चलाना

किस्मों एवं बीजों का चयन

पौधे का वह भाग जिसमें भ्रूण उपस्थित हो, जिसकी अंकुरण क्षमता, आनुवंशिक एवं भौतिक शुद्धता तथा नमी आदि मानकों के अनुरूप होने के साथ ही बीज जनित रोगों से मुक्त हो। बीज फसल का वह अवयव है जिसमें जीवन सुसुप्तावस्था में सुरक्षित रहता है। बीज में अनुवांशिकी गुण क्षमता आगामी वर्ष में स्वस्थ पौधों को जन्म देने की प्रक्रिया में निहित होती है जिससे फसल का अच्छा विकास होता है। जिस प्रकार किसी भवन का भविष्य उसकी नींव पर होता है, ठीक इसी प्रकार अच्छा फसल उत्पादन बोये गये अच्छे बीज पर निर्भर करता है। अच्छे बीज की कम मात्रा ही पर्याप्त रहती है।

उन्नत एवं शुद्ध बीज द्वारा उत्पादित फसल में खरपतवार, कीटों एवं व्याधियों का प्रयोग न्यूनतम होता है। साथ ही उन्नत बीज में कीट व्याधियों का प्रतिनिरोधकता य सहनशीलता होती है। उन्नत बीज से अधिक उपज प्राप्त होती है और अंततः अधिक आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत सस्ते और खराब गुण वाले बीजों को बोने से न तो अच्छा अंकुरण मिलता है और न ही अच्छी पैदावार। साथ ही किसानों द्वारा दिए जाने वाले खाद, पानी व खेत की तैयारी में की गई मेहनत भी बेकार चली जाती है। अतः अधिकतम कृषि उत्पादन प्राप्त करने हेतु केवल अच्छे बीजों का प्रयोग ही करना चाहिये।

जैविक कृषि में ऐसी किस्मों का चयन करना चाहिए जो कि भूमि एवं जलवायु के अनुकूल हो। किस्मों के चयन में अनुवांशिक विविधता को ध्यान में रखना चाहिए। जैविक कृषि में जैविक प्रमाणित बीजों का ही उपयोग करना चाहिए। यदि जैविक प्रमाणित बीज की उपलब्धता नहीं हो तो परम्परागत सामान्य बीज का उपयोग कर सकते हैं।

बीज मात्रा-

गेहूँ की जैविक खेती के लिए बीज की मात्रा समय, मिट्टी में नमी, बुवाई की विधि एवं किस्मों के दानों पर निर्भर करती है। जल्दी और समय से बुवाई के लिए 100 से 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज पर्याप्त होता है। देर से बुवाई में 125 से 130 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बीज मात्रा ठीक रहती है।

जैविक बीजोपचार

वातावरण की नत्रजन के प्रभावशाली जैव यौगिकीकरण के लिये गेहूँ के बीज को एजोटोबेक्टर कल्चर से उपचारित करते हैं। फास्फोरस विलयकारी जीवाणु (पी एस बी) कल्चर से बीज को उपचारित करके भूमि में फास्फोरस की उपलब्धता को बढ़ाया जा सकता है। प्रत्येक किलोग्राम बीज के लिए दोनों कल्चर का 10-10 ग्राम उपयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए बीज को बुवाई से पहले गुड़ के घोल से नम करके उसे जीवाणु कल्चर के साथ अच्छी तरह मिलाकर, बोने से पहले छाया में सुखाना चाहिए।

बीज उपचार बीज के बढ़ने की शक्ति को बढ़ाता है और वे तेजी से बढ़ते हैं।

स्पुडोमोनास फ्लोरिसेंस 0.5% WAPA10 ग्राम/किलोग्राम।

बुवाई की विधि

जैविक गेहूँ की बुवाई छिटकर तथा पंक्ति में दोनों विधि से की जाती है। पंक्ति में बोने हेतु बैल के पीछे बूड़ में बैल चालित सीड ड्रिल अथवा ट्रैक्टर चालित सीड ड्रिल का प्रयोग करते हैं। गेहूँ की जैविक फसल के लिए बुवाई के समय खेत में नमी का होना आवश्यक है। बुवाई हल द्वारा कूड़े में 4 से 5 सेंटीमीटर गहराई में करें। पंक्तियों की दूरी 19 से 23 सेंटीमीटर रखें। यदि बुवाई में देरी हो तो पंक्तियों की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर रखें, जिससे इकाई क्षेत्र में पौध संख्या बढ़ जाती है और देर से बुवाई द्वारा उपज में हास काफी हद तक कम हो जाता है।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार रोकथाम

गेहूँ की जैविक खेती के लिए खरपतवारों से फसल को मुक्त रखें,

खरपतवार नियंत्रित करने हेतु गेहूँ की फसल में दो बार निराई-गुड़ाई करना लाभप्रद होता है। प्रथम निराई-गुड़ाई बुवाई के 30 से 40 दिन बाद एवं दूसरी गुड़ाई फरवरी माह में आवश्यक हो जाती है, क्योंकि तापमान बढ़ने पर फसल के साथ खरपतवारों की वृद्धि भी होती है।

निराई - गुड़ाई करने से (पौध संख्या इष्टतम रहती है) अवांछित खरपतवारों से छुटकारा मिलता है और मिट्टी में उपयुक्त वायु संचार बना रहता है।

गेहूँ की जैविक खेती के लिए फसल में खरपतवार नियंत्रित रहे, यह मुख्यतः कई बातों पर निर्भर करता है, जैसे फसल चक्र, बुवाई का समय, खेत की तैयारी इत्यादि।

फसलचक्र बदलने से वार्षिक खरपतवारों का नियन्त्रण स्वतः ही हो जाता है। गुड़ाई हेतु परम्परागत यंत्रों की तुलना में उन्नत कृषि यंत्रों जैसे व्हील-हो, हैण्ड हो इत्यादि से खरपतवारों का नियन्त्रण प्रभावी रूप से होता है और परिश्रम भी कम करना पड़ता है।

पोषण प्रबंधन

खाद की मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर सुनिश्चित करते हैं। सामान्य मृदा में 10-12 टन सड़ी गोबर अथवा कम्पोस्ट खाद तथा 400-500 किलोग्राम धन जीवामृत प्रति एकड़ आवश्यक होता है।

जैव उर्वरक एजोरोबैक्टर, पीएसबी, पोटाश एवं जिंक घोलक जीवाणु कल्चर का उपयोग बुवाई से पूर्व बीज उपचार करते समय करें। इन कल्चर की मात्रा उत्पादन कर्ता की संस्तुत के आधार पर निश्चित करें। जैविक खादों एवं अन्य पोषक तत्वों के प्रबंधन में जैविक साधनों को अधिक से अधिक फार्म (खेत) पर ही बनाकर पोषण प्रबंधन करना चाहिए। गोबर की खाद, देशी खाद, केंचुआ खाद, गोबर गैस की खाद, मूत्र, फसल अवशेष एवं हरी खाद को जैविक कृषि में तभी इस्तेमाल कर सकते हैं खेत के बाहर तैयार की गई खादों को प्रयोग नहीं करना चाहिए। स्थानीय स्तर पर उपलब्धता के आधार पर उपरोक्त खादों में से कोई एक अथवा दो या तीन खादों को सम्मिलित रूप से उपयोग कर सकते हैं। जब जैविक खादों का सम्मिलित उपयोग हो रहा हो तो इस बात का प्रमुख रूप से ध्यान रखना चाहिए कि फसल को कुल मिलाकर 100 किलोग्राम नत्रजन 60 किलोग्राम फास्फोरस और 40 किलोग्राम पुटास प्रति हैक्टर मिले। जैविक खादों का उपयोग बुवाई के 10-15दिन पहले करना चाहिए।



कुछ प्रमुख जैविक खादों में विद्यमान पोषक तत्वों के आधार पर गेहूँ के लिए निर्धारित दर निम्न प्रकार हैं।

खाद	उपलब्ध पोषक तत्वों (%)			निर्धारित मात्रा टन (प्रति एकड़)
	नत्रजन	फास्फोरस	पोटास	
देशी खाद	0.5 से 1.0	0.25 से 0.5	0.5 से 1.0	1 से 2
केंचुआ खाद	1.5 से 3.0	1.0 से 1.5	0.5 से 1.5	2.5 से 4
प्रोम	0	20-35	0	0.05

सिंचाई एवं जल प्रबंधन

फसल की सिंचाई की संख्या उपलब्ध संसाधन एवं फसल की अवस्था पर निर्भर करती है। जहां तक संभव हो सिप्रंकलर से सिंचाई करें। गेहूँ की जैविक खेती लिए 3-4 सिंचाई पर्याप्त रहती है।

पहली सिंचाई - बुवाई के 20-30 दिन पर जड़ों के विकास पर

दूसरी सिंचाई - बुवाई के 45-50 दिन पर कल्ले फूटने पर

तीसरी सिंचाई - बुवाई के 70-75 दिन पर बालियाँ निकलते समय

चौथी सिंचाई - दाना पकते या दूध बनते समय

गेहूँ की जैविक खेती में पहली सिंचाई बुआई के 15 दिनों के बाद एक सिंचाई देना जरूरी है क्योंकि इसके बाद से पौधों में नई जड़ें आनी शुरू होती हैं। अगर जमीन में नमी न हो तो पौधा नई जड़ें नहीं बनाएगा और बढ़वार रुक जाएगी सिंचाई के बाद 4 क्विंटल केंचुआ खाद छीट दें। सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें, साथ ही खरपतवार भी निकाल दें। यह करना अति आवश्यक है, नहीं तो सिंचाई और खाद देने के बाद खेत में खरपतवार भर जायेंगे। इस तरह की गुड़ाई करने से गेहूँ के पौधे की जड़ों को लंबा होने में मदद मिलती है और वे मिट्टी से ज्यादा पोषण एवं नमी प्राप्त करते हैं। दूसरी सिंचाई बुआई के 25 दिनों के बाद दूसरी सिंचाई देना चाहिए क्योंकि इसके बाद से पौधों में नए कल्ले तेजी से आने शुरू होते हैं और नए कल्ले बनाने के लिए पौधों को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होती है। सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें साथ ही खरपतवार भी निकाल दें यह करना अति आवश्यक है नहीं तो सिंचाई देने के बाद खेत में खरपतवार भर जायेंगे।

तीसरी सिंचाई बुआई के 35 से 40 दिनों के बाद तीसरी सिंचाई देना चाहिए। इसके बाद से पौधे तेजी से बढ़े होते हैं साथ ही नए कल्ले भी आते रहते हैं। इसके लिए पौधों को अधिक नमी एवं पोषण की जरूरत होगी। इसलिए सिंचाई के तुरंत बाद 15 किलो यूरिया एवं 13 किलो पोटाश खाद प्रति एकड़ जमीन के हिसाब से छिड़काव करें। सिंचाई के 2-3 दिन बाद पतले कुदाल या वीडर से मिट्टी को ढीला करें एवं खरपतवार को निकाल दें। इससे मिट्टी ढीली होगी, जड़ों को हवा मिलेगी और पौधे तेजी से बढ़ेंगे।

गेहूँ की फसल में चौथी 60वें, 80वें एवं 100 वें दिनों पर की जाती है यह समय मिट्टी के प्रकार एवं मौसम पर निर्भर करता है। ध्यान देने की बात यह है कि फूल आने के समय एवं दाना में दूध भरने के समय पानी की कमी नहीं होनी चाहिए नहीं तो उपज में काफी कमी होती है। फूल आना एवं दाना में दूध भरने का समय एक महत्वपूर्ण अवस्था है इस समय पानी की कमी विल्कुल नहीं होनी चाहिए।

फसल की देखरेख

कीटों एवं बीमारियों के सफलता पूर्वक प्रबंधन के लिये प्रतिरोधक या सहनशील किस्मों को उगाना चाहिए। सामान्यतः गेहूँ की फसल पर कीट रोग का प्रयोग न के बराबर होता है, फिर भी कभी-कभी माहुँ का प्रकोप देखा गया है। ऐसे में 5 प्रतिशत मीन बीड का राख अथवा 5 मि.ली. प्रतिलीटर पानी में नीम का स्रं करना लाभदायक होता है।

दीमक प्रभावित क्षेत्र में बुवाई के समय एक बड़े चने के आकार का हींग को लेकर 3-5 ली गाय के दूध घी में घोलकर पूरे खेत में स्रं कर बुवाई कर दें। बुवाई के पश्चात छिद्र युक्त मटका में सूखे गोबर, उपले, मक्का की गिल्ली भर कर मुहं पर कपड़ा बांधकर खेत के किनारे गाड़ दें। इसे निकाल कर मुर्गी को खिला दें अथवा जलाकर नष्ट कर दें।

गेरुआ रोग के लक्षण दिखाई देने पर ट्राईकोडर्मा जैविक फफूंदनाशी 10 ग्राम लीटर पानी में घोल कर स्रं करें। रोग रोधी किस्मों की बुवाई करें।

अन्य रोग व कीट हेतु जैविक उपचार

1.) **इल्ली नियंत्रण**— 5 लीटर देशी गाय के मूत्र में 5 किलो नीम के पत्ते को डालकर 10 दिन तक सड़ाये, बाद में नीम की पत्तियों को निचोड़ लें। इस नीमयुक्त मिश्रण को छानकर 150 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ के मान से समान रूप से फसल पर छिड़काव करें। इससे इल्ली व माहुँ का प्रभावी नियंत्रण होता है। 5 लीटर मूत्र में 1 किलो नीम के पत्ते व धतूरे के पत्ते डालकर, 10 दिन सड़ने दें। इसके बाद मिश्रण को छानकर इल्लियों का नियंत्रण करें।

2.) **दीमक नियंत्रण** — मक्का के भुंटे से दाना निकालने के बाद, जो गिण्डीयों बचती है, उन्हें एक मिट्टी के घड़े में इकट्ठा करके घड़े को खेत में इस प्रकार गाड़े कि घड़े का मुँह जमीन से कुछ बाहर निकला हो। घड़े के ऊपर कपड़ा बांध दें तथा उसमें पानी भर दें। कुछ दिनों में ही आप देखेंगे कि घड़े में दीमक भर गई है। इसके उपरांत घड़े को बाहर निकालकर गरम कर लें ताकि दीमक समाप्त हो जायें। इस प्रकार के घड़े को खेत में 100-100 मीटर की दूरी पर गाड़े तथा करीब 5 बार गिण्डीयों बदलकर यह क्रिया दोहराएं। खेत में दीमक समाप्त हो जाएगी। सुपारी के आकार की हींग एक कपड़े में लपेटकर तथा पत्थर में बांधकर खेत की ओर बहने वाली पानी की नाली में रख दें। उससे दीमक तथा उगरा रोग नष्ट हो जाएगा।

3.) **उगरा नियंत्रण** — 1 लीटर मूत्र में चने के आकार के 3 हींग के टुकड़े मिलाकर उससे चने का बीजोपचार कर तत्पश्चात बोनी करें। सोयाबीन, उड़द, मूंग एवं मसूर के बीजों को अधिक गीला न करें।

4.) **सूत्रकृमी नियंत्रण** — अदरक 250 ग्राम, मिर्च 250 ग्राम, निर्गुण्डी की 1 कि.ग्रा. पत्तियां, लहसुन 500 ग्राम, ग्वारपाटा 500 ग्राम तथा 1 कि.ग्रा. निम्बोली मिलाकर अच्छी तरह पेस्ट बना लें। उसे 150 लीटर पानी में मिलाकर लगभग 1 एकड़ जमीन में छिड़काव करते हैं। सामान्यतः फसल लगने के 120 दिनों के बाद इसका छिड़काव करने से सूत्रकृमी का नियंत्रण हो जाता है।

5.) **गेहूँ के कीड़ों का नियंत्रण** — 1 कि.ग्रा. निर्गुण्डी के पत्ते, 1 कि.ग्रा. भारंगी (संकुप्पी), 1 कि.ग्रा. ग्वारपाटा एवम् 1 कि.ग्रा. निम्बोली को अच्छी तरह से पीसकर 100 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार कर लेते हैं। यह एक एकड़ के लिए पर्याप्त होता है।

6. जैविक फफूंदनाशियों स्क्रूडोमोनास, फ्लोरोसेन्स और ट्राइकोडर्मा का छिड़काव 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में करें।

फसल की कटाई एवं गहाई

गेहूँ की जैविक खेती के पकने की अवधि किस्म पर निर्भर करती है जो कि 120-130 दिन के मध्य होती है। साधारणतः फसल पकने पर पत्तियाँ जाती हैं (पीली हो जाती हैं) हालांकि कभी-कभी एक दो पत्तियाँ हरी भी रह जाती हैं। दाने में 20-25 प्रतिशत नमी रह जाने पर फसल की कटाई करनी चाहिए। कटाई के पश्चात् फसल को 3-5 दिन तक धूप में सुखाकर थ्रेशर से या हाथ से गहाई करनी चाहिए। सामान्य कृषि (रासायनिक कृषि) से जैविक कृषि में रूपान्तरण अवधि के प्रारम्भिक वर्षों में गेहूँ की उपज में 5-10 प्रतिशत की कमी होती है। लेकिन इसके पश्चात् जैविक कृषि में उपज सामान्य (रासायनिक) कृषि के बराबर या उससे अधिक प्राप्त होती है।

भण्डारण में कीटों से सुरक्षा

- गेहूँ के भण्डारण में अक्सर घुन का प्रकोप होता है, ज्यादा प्रकोप होने पर भण्डारित गेहूँ पूरी तरह नष्ट हो सकता है। इसकी रोकथाम के लिए हमें निम्न बातों का ध्यान देना चाहिए, जैसे—
- भण्डार गृहों को साफ सुथरा रखना चाहिए, भण्डार गृहों की दरारों और सुराखों को सीमेंट से बन्द कर देना चाहिए।
- गेहूँ को भण्डारण के पूर्व पूरी तरह साफ कर सुखा लेना चाहिए, अनाज में नमी का स्तर 8 से 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।
- गेहूँ अनाज को नीम की पत्तियों को मिलाकर भण्डारण करने से भी कीटों का प्रकोप नियन्त्रित होता है।

गेहूँ की जैविक खेती हेतु आवश्यक जानकारी


- अगेती बुवाई यदि नमी उपलब्ध हो तो करें और उचित प्रजाति का चयन परिस्थिति के अनुसार करें।
- बीज की सामान्य मात्रा का प्रयोग करें, कतार से कतार की दूरी 17 से 20 सेंटीमीटर रखें।
- गेहूँ की जैविक खेती के लिए छिटकवां विधि में बीजों का वितरण समान नहीं हो पाता तथा निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियन्त्रण में असुविधा रहती है, इसलिए बुवाई कतारों में करें।
- फसलवक्र अपनाएं, इससे वार्षिक खरपतवार एवं रोग और कीट नियन्त्रित रहते हैं।
- बीज की अधिक गहराई पर बुवाई न करें।
- निराई-गुड़ाई 30 से 40 दिन एवं दूसरी फरवरी माह में अवश्य करें।
- गेहूँ की जैविक खेती के लिए रोग रोधी उन्नत संस्तुत प्रजातियों की बुवाई करें।

होशंगाबाद जिले के लिए उपयुक्त गेहूं की उन्नत किस्म


किस्म	अवधि (दिन)	उपज	विशेषताएं
सिंचित (समय से)			
जी.डब्ल्यू-322	115-120	60-62	दाना शरबती, चमकदार एवं चपाती के लिये उपयुक्त, तना एवं पीला गेरुआ रोग प्रतिरोधी किस्म है।
एच.आई-1544	110-115	55-60	पौधे की औसत ऊंचाई 85-90 से.मी. होती है। इसके दाने अम्बर कलर एवं मध्य सख्त होते हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 40-45 ग्राम होता है।
एच.आई-8759 (पूसा तेजस)	115-125	50-55	गेहूं की यह प्रजाति आयसन, प्रोटीन, विटामिन-ए और जिंक जैसे पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत मानी जाती है। यह किस्म रोटी के साथ नूडल्स, पास्ता और मैकरॉनी जैसे खाद्य पदार्थ बनाने के लिए उत्तम है। वहीं इस किस्म में गेरुआ रोग, करगल बंट रोग और खिरने की समस्या नहीं आती है।
डी.बी.डब्ल्यू-187 (करण वंदना)	120-125	60-65	यह एक नई किस्म है जो की सभी रोगों के लिए प्रतिरोधी है।
सिंचित (देरी से)			
जे.डब्ल्यू-1202	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त यह सभी रोगों के प्रति सहनशील है।
जे.डब्ल्यू-1203	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त साथ ही साथ प्रोटीन की प्रचुर मात्रा, सभी रोगों के प्रति सहनशील है।
एच.डी-2932	105-110	40-45	पौधे की औसत ऊंचाई 80-85 से.मी. होती है। इस किस्म में अधिक फूलव, गहरे हरे रंग की मोमयुक्त पत्तियां तथा तना गजबूत होता है। यह किस्म काली एवं भूरी गेरुआ प्रतिरोधी किस्म है। इसके 1000 दानों का औसत वजन 35-40 ग्राम होता है।
असिंचित व असिंचित			
जे.डब्ल्यू-3288	120-122	45-47	बालिया लंबी, दाना लंबा चमकदार, आकर्षक, शरबती, मध्यम ऊंचाई, रोगों के प्रति सहनशील
जे.डब्ल्यू-3382	115-120	55-60	अधिक तापमान सहन करने की क्षमता
जे.डब्ल्यू-3269	115-120	42-45	सूखा एवं काला गेरुआ के प्रति सहनशील
एच.आई-1531 (हर्षिता)	115-120	40-45	मध्यम ऊंचाई, दाना शरबती, मध्यम आकार का, रोगों के प्रति सहनशील
देशी किस्म			
खपली गेहूं	110-115	18-20	पास्ता के लिए उपयुक्त, उच्च प्रोटीन युक्त, सुगर फ्री
बंशी गेहूं	120-122	30-35	प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व पाए जाते हैं, असिंचित क्षेत्र के लिए उपयुक्त
लोक 1 गेहूं	115-120	45-50	खाने में स्वादिष्ट, उच्चतापमान सहनशील, कम पानी में उपयुक्त

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, होशंगाबाद


भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर



कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर होशंगाबाद



गेहूं की जैविक खेती



डॉ. संजीव कुमार गर्ग
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
ब्रजेश कुमार नामदेव
वैज्ञानिक पौध संरक्षण
राहुल माझी
कार्यक्रम सहायक कम्प्यूटर

भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर